जो चाहें सो कैसे पायें ?

अनुक्रमणिका

आत्म-विश्वास कल्पतरु है

श्री एडमंड कैपूर बाइस ने विश्व महायुद्ध के शूरवीर सैनिकों के विषय में लिखा है—"हम जिन नवयुवकों को अत्यन्त साधारण समझ रहे थे युद्ध में उनके अद्वितीय कारनामे सुनकर हमें अचरज हुआ। उदाहरणतः एक नवयुवक जो विद्यार्थी जीवन से सर्वथा शिथिल था एवं श्रेणी में प्रायः अनुपस्थित रहा करता था, शायद ही कभी उत्तीर्ण हो पाता था, उसने सेना में प्रवेश पाने का प्रयत्न किया परन्तु वह मेडिकल परीक्षा में अयोग्य घोषित किया गया। उसने बहुत यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। पता नहीं कैसे कुछ दिनों उपरान्त वह सेना में स्थान पाने में सफल हो गया। इस समाचार से यह विचार आया कि कुछ ही दिनों बाद वह अङ्गहीन होकर रणक्षेत्र से वापस आ जाएगा परन्तु उस भयानक युद्ध-क्षेत्र में उसने ऐसे विषम साहस का प्रदर्शन किया कि उसे सुनकर हमें भारी अचम्भा हुआ। वही नवयुवक जो कुछ दिनों पूर्व अयोग्य एवं अकर्मण्य माना जाता था उसने जलते हुए एक बम को उठा लिया और खाई से बाहर फेंक दिया और भीषण गोली वर्षा में अपनी जान पर खेलकर अपने एक साथी की प्राण रक्षा की।" ऐसे कई नवयुवक

आत्म-विश्वास कल्पतरु है

श्री एडमन्ड कैंपूर शाइस ने विश्व महायुद्ध के शूरवीर सैनिकों के विषय में लिखा है—"हम जिन नवयुवकों को अत्यन्त साधारण समझ रहे थे, युद्ध में उनके अद्वितीय कारनामे सुनकर हमें अचरज हुआ। उदाहरणतः एक नवयुवक जो विद्यार्थी जीवन से सर्वथा शिथिल था एवं श्रेणी में प्रायः अनुपस्थित रहा करता था, शायद ही कभी उत्तीर्ण हो पाता था, उसने सेना में प्रवेश पाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह मेडिकल परीक्षा में अयोग्य घोषित किया गया। उसने बहुत यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। पता नहीं कैसे कुछ दिनों उपरान्त वह सेना में स्थान पाने में सफल हो गया। इस समाचार से यह विचार आया कि कुछ ही दिनों बाद वह अङ्गहीन होकर रणक्षेत्र से वापस आ जाएगा परन्तु उस भयानक युद्ध-क्षेत्र में उसने ऐसे विषम साहस का प्रदर्शन किया कि उसे सुनकर हमें भारी अचम्भा हुआ। वही नवयुवक जो कुछ दिनों पूर्व अयोग्य एवं अकमण्य माना जाता था, उसने धसते हुए एक बम को उठा लिया और खाई से बाहर फेंक दिया और भीषण गोली वर्षा में अपनी जान पर खेलकर अपने एक साथी की प्राण रक्षा की।" ऐसे कई नवयुवक

हमें जीवन में मिलते हैं जो अकस्मात् किसी कार्य में अद्वितीय रूप से सफल होकर हमें चकित कर देते हैं। भले ही वे दूसरों से कम योग्यता रखते हों, परन्तु उनके आत्म विश्वास की अधिकता उन्हें दूसरों से अधिक सफल बना देती है। सफलता की ऊँची चोटी पर चढ़ने में उनका आत्मविश्वास उनका सहायक होता है। आत्मविश्वास के द्वारा ही असम्भव प्रतीत होने वाले कार्य सम्भव हो जाते हैं।

यदि मानव में समीचीन विचार-शक्ति होती तो संसार में विश्वास का ही सदा शासन होता। परमेश्वर ने तो मानव को डर, निराशा भाव आदि का शाप नहीं दिया उसने तो बल एवं स्वस्थता का वरदान दिया परन्तु मानव अपना मूल्यांकन अपनी शक्ति के अनुसार न करके अपनी अशक्ति अथवा दुर्बलता के अनुसार करता है। वह अपना महत्व विजय से नहीं अपना लघुत्व अपनी पराजय से नापता है। बहुत-से लोग अपनी विजय की आकांक्षाओं को केवल स्वप्न समझते हैं वे उन्हें अपने जीवन का एक अङ्ग नहीं बना पाते। अनेक मनुष्य यह मानते हैं कि आत्मविश्वास प्रत्येक प्रकार की सफलता के लिए अनिवार्य है। शक्तिशाली प्रेरक शक्ति इस जगत् में कोई है तो वह आत्मविश्वास ही है। यह कथन सर्वथा उचित है कि मानव नहीं बल्कि विश्वास ही आगे बढ़ते हैं।

मानव का अपना सामर्थ्य तो केवल साधन-मात्र है। वास्तविक सामर्थ्य तो मानव में विश्वास द्वारा उत्पन्न होती है। उसी की सत्ता से मनुष्य असंभव को सम्भव बनाता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि सामर्थ्य होते हुए

भी मनुष्य विश्वास के अभाव के कारण असफल हो जाता है। युद्ध-क्षेत्र में मोर्चे पर डटे एक वीर का यह कथन जीवन-संग्राम में लगे मनुष्य के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है—"रण में बन्दूक नहीं लड़ती उसे थामने वाला सैनिक युद्ध नहीं करता, बल्कि उस सैनिक का हृदय युद्ध करता है बल्कि हृदय भी नहीं उस हृदय में विद्यमान उसका विश्वास युद्ध करता है।

युद्ध के दिन थे। राज्य की ओर से प्रत्येक मनुष्य को बन्दूक दी गई थी। एक मनुष्य बन्दूक उठाकर अपने मकान की छत पर जा बैठा। अकस्मात् मकान के नीचे एक शत्रु आया और उसने उसे ललकारा। वह बोला—'बन्दूक इधर फेंको अन्यथा अपनी लाठी से तुम्हारा अङ्ग-अङ्ग तोड़ दूँगा।' बन्दूक वाला मनुष्य काँप उठा। उसने नीचे लाठी-धारी शत्रु को देखा। हाथ में बन्दूक होते हुए भी साहस के अभाव के कारण उसके हाथों से बन्दूक खिसकी और लाठी-धारी के पास जा गिरी। उसने हँसकर उसे उठा लिया उसकी पहली गोली उस बन्दूक के स्वामी की छाती में लगी और उसे इस लोक को छोड़ना पड़ा।

अपनी प्लटून (टुकड़ी) का शूरवीर गोलियथ जब इजराइलियों के शिविर में पहुँचकर उन्हें लड़ने के लिए ललकारने लगा तब वे लोग उसकी ललकार सुनकर काँप उठे आगे बढ़ कर गोलियथ से जूझने का किसी में साहस न हुआ। जब गोलियथ ने दुबारा उन्हें चुनौती दी तो डेविड नामक एक साधारण नवयुवक उससे जूझने को उतारू हो गया। बड़ों से आज्ञा पाकर जब उसने आगे

कदम बढ़ाया तब उन्होंने उसे कई शस्त्र दिये। परन्तु डेविड ने यह कहकर उन शस्त्रों को लौटा दिया—"इन शस्त्रों का प्रयोग करने की मुझे आदत नहीं, मेरे लिए ये किसी काम के नहीं हैं मैं अपने ही हथियारों द्वारा युद्ध करूँगा।' नाला से कुछ पत्थर उठाकर और अपने धनुष को साथ कर वह युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। उधर गोलियथ अपने भारी शस्त्रास्त्रों से लैस था। उस निःशस्त्र नवयुवक को युद्ध के लिए आगे बढ़ते देखकर गरज उठा आओ मेरे सम्मुख आओ तो मैं तुम्हारे टुकड़े करके आसमान के पंछियों को खिला डालूँ।' डविड ने असीम साहस भरा उत्तर दिया "मेरे सम्मुख तुम ढाल और खड्ग लेकर आए हो परन्तु मैं अपने संग एक अप राजेय शस्त्र लेकर आया हूँ, वह है विजयी-शिरोमणि इजराइल का दृढ़ विश्वास। उसी शक्ति के बल पर मैं आज तुम्हें परास्त करूँगा।"

डेविड को अपने शत्रु की भाँति बाहरी शस्त्रास्त्रों का सहारा न था, अपितु उसे परमात्मा की शक्ति पर विश्वास था। उसी की सामर्थ्य से वह उस महारथी को पछाड़ने में सफल हुआ। वह युवक विश्वास के कवच से सुरक्षित था। उसके धनुष से छूटे एक ही पत्थर के टुकड़े ने गोलियथ के मस्तक में गड़कर उसका काम तमाम कर दिया।

अत सफलता की कुंजी यदि कोई है तो वह विश्वास है। विश्वास के अभाव में विजय असंभव है। विश्वास को दृढ़ कीजिए सफलता आपके पैर में लोटेगी। किसी भी विजेता की ओर ध्यान दीजिए उसकी जीत का रह

स्य उसके अटल विश्वास में है। संसार का सबसे बड़ा चमत्कार विश्वास ही है। विश्वास के आधार पर ही मानव की सम्पूर्ण सफलताओं का भवन टिका हुआ है। विश्वास के बल से आप उस कार्य में भी सफल हो सकते हैं जिसे आप असंभव मान बैठे हैं।

आत्मविश्वासी मनुष्य के लिए कौन-सा काम असंभव है? आत्मविश्वास को जागृत करके हम अपने बल को द्विगुणित कर लेते हैं। हमारी विविध प्रसुप्त शक्तियाँ जागृत हो उठती हैं। आत्मविश्वास के बल पर कहे हुए शब्द सहस्रों लोगों के मन में उस विश्वास का संचार कर सकते हैं, जिसके बल पर वे भयानक से भयानक संकट में भी पर्वत के समान अटल रहें। सर्वशक्तिमान् भगवान् के प्रति विश्वास के अभाव में मानव वह कदापि नहीं बन सकता जो वह बनने की आकांक्षा रखता है। ईश्वरद्रोह की संपूर्ण भावनाएँ शून्य से वृथा वापस लौट आती हैं। कितना ही परिश्रम किया जाए, पर अविश्वास ऐसा घातक शस्त्र है जिसके द्वारा सफलता की संभावनाएँ कट जाती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी से ऊपर को फेंका हुआ पाषाण अन्तरिक्ष में नहीं पहुँच सकता, उसी प्रकार अविश्वासी मन जीवन के उच्च लक्ष्य स्थल तक नहीं पहुँच सकता, क्योंकि पाषाण ऊपर जाता हुआ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम को तोड़ता है और अपनी सफलता पर सन्देह और अविश्वास जीवन के नियम को तोड़ता है।

आत्मविश्वासी एवं आत्मविश्वास से रहित मनुष्य में धरती और आकाश का अन्तर है। आत्मविश्वास से रहित व्यक्ति का जीवन निरन्तर पराजय की ओर मुड़ता

रहता है जबकि आत्मविश्वासी मनुष्य का जीवन अवि राम गति से विजय की ओर अग्रसर होता रहता है। संसार में जो भी महान् कार्य हुए हैं वे आत्मविश्वास के बल पर हुए हैं। जिन लोगों को अपनी शक्तियों पर विश्वास नहीं, वे शक्ति को प्राप्त भी नहीं कर सकते और न ही किसी विषय में कृतकार्य हो सकते हैं।

एक नवयुवती अपने पत्र में लिखती है—"मैंने अपने जीवन में निरन्तर भूलें की हैं। मुझे प्रत्येक कार्य में असफलता का मुँह देखना पड़ा है। मुझे कभी भी अपने ऊपर भरोसा नहीं हुआ। शायद भविष्य में भी कदापि न हो सकेगा।' उस नवयुवती की असफलताओं का कारण उसमें आत्मविश्वास का अभाव है। संशयात्मा सदा विफल होता है और अन्त में बुरी तरह नष्ट होता है इसी प्रकार निराशापूर्ण एवं सविग्न भी किसी कार्य में सफल नहीं हो सकता। सबसे पहले हृदय के अन्दर ही सफलता का बीजारोपण होता है। जब मन में ही सफलता जड़ न जमा सकी तो संसार की कोई भी शक्ति सफलता पाने में सहायता नहीं कर सकती।

अधूरे आत्मविश्वास के कारण अनेकों मनुष्य अपने जीवन को नष्ट कर डालते हैं। ऐसे केवल दो प्रतिशत मनुष्य ही इस संसार में होंगे, जो वास्तव में अपने गौरव एवं अपनी योग्यता पर विश्वास रखते हैं। नैपोलियन अथवा वेब्स्टर की योग्यता कुछ भी न कर पाती, यदि उन्हें अपनी योग्यता पर विश्वास न होता।

विजय पर अटल विश्वास, अपने सामर्थ्य पर अटूट निष्ठा, सफलता की पहली घात है। कालिज छोड़कर जब

वेन एडम्स आई तो उसकी देह की देखकर डाक्टरों का कथन था कि वह छः मास से अधिक शायद ही जिएगी परन्तु उसने ■ मास में ही उस काम को पूर्ण कर लिया जो उसे करना था। वह अनेकों वर्ष तक जीवित रही और मानव कल्याण के लिए हल हाउस' की स्थापना में सफल हुई। उसकी सफलता के आधार-स्तम्भ थे— आत्मविश्वास तथा ईश्वर विश्वास।

एक मनुष्य सर्वथा क्षीणकाय और निर्बल था। उसे एक मनोवैज्ञानिक ने मन्त्रमुग्ध करके उसमें ऐसा आत्म-विश्वास जगाया कि वह मनुष्य सात आठ लोगों को अपने शरीर पर बिठा सकने में सफल हुआ। तनिक विचार कीजिए कि उसमें यह असामान्य असीम शक्ति आई कहां से ? उस मनोवैज्ञानिक ने उसमें जो विश्वास की भावना भर दी थी उसी के बल पर वह ऐसा कर सका। इसके बाद जब उसे यह कह दिया गया कि उसमें उस बोझ को उठाने का सामर्थ्य नहीं तो वह विश्वास-हीन हो गया और तुरन्त ही धरती पर गिर पड़ा।

आत्मविश्वास के बिना हम प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकते। हमारे आत्मविश्वास के आगे हमारी सफलता नहीं रुक सकती। हमारे संकुचित विचार हमें अपने सीमा-बन्धन में बांध रखते हैं। उन्हें तोड़कर जब तक हम इन विश्वास के राज्य में पग नहीं धरते, तब तक हम अपनी आशा-आकांक्षाओं के स्वप्न को पूरा नहीं कर सकते।

शायद एक मनोवैज्ञानिक शेक्सपीयर अथवा वेब्स्टर को भी यह विश्वास दिला सकता कि वे अधिक से अधिक

यदि कुछ हैं तो मूक हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि मनोवैज्ञानिक की बात को ठीक मानने की शक्ति मनुष्य में कहाँ से आती है? मनोवैज्ञानिक क्या उस व्यक्ति में शक्ति डाल देता है? ऐसा कदापि नहीं होता। वास्तव में शक्ति तो मानव के भीतर है, मनोवैज्ञानिक तो उस शक्ति को बाहर प्रकट कर देने का कार्य करता है। किसी प्रबल मल्ल की शक्ति केवल उसके पुट्ठों में नहीं रहती, वह तो उसके अन्तःकरण से आती है। उसके हृदय से यदि उन मांस पेशियों का सम्बन्ध काट दिया जाए तो उसमें उसकी दसमांश शक्ति भी बाकी न रहे। ज्यों-ज्यों आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, त्यों त्यों कार्य करने का सामर्थ्य भी बढ़ता जाता है। यदि हमने आत्मविश्वास का बर्तन छोटा रखा तो उसमें दैवी शक्ति का प्रभाव भी कम ही आ पाएगा।

अब्राहम लिंकन में नम्रता थी उसमें अहङ्कार न था, परन्तु जब अमेरिका में गृह-युद्ध के बादल छा गए और राष्ट्रपति का चुनाव आया, तो उस समय लिंकन के हृदय में यह प्रेरणा हुई कि वह क्यों न सारे राष्ट्र की बागडोर सम्भाले। वह राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बना। राजनीतिज्ञों को उसने बता दिया कि वह इस आपत्काल में देश का कर्णधार बनने की पूरी योग्यता रखता है। उसने यह भी आत्मविश्वास प्रकट किया कि वह चुनाव में अवश्य ही विजयी होगा। यह आत्मश्लाघा के वचन न थे, अपितु दृढ़ आत्मविश्वास की ओजस्वी वाणी थी। इसी आत्मविश्वास के कारण वह अमेरिका के राष्ट्रपति पद को पा सका।

आत्मविश्वासी व्यक्ति इतिहास में अमर हो गए हैं। उन्हें निश्चय था कि उनके स्वप्न अवश्य ही पूर्ण होंगे। आत्मविश्वास के बल पर ही वे निरन्तर आगे हो आगे बढ़ते चले गये और अन्त में अपने लक्ष्य पर पहुँच कर ही उन्होंने दम लिया, क्योंकि जिन्हें यह विदित होता है कि उन्हें कहाँ पहुँचना है, उनके लिए संसार अपने आप रास्ता छोड़ देता है।

प्रबल आत्मविश्वास के बल पर ही 'जोन आफ आर्क' फ्रेंच सेना की सेनापति बनने में सफल हुई। उसकी यह निष्ठा थी कि परमेश्वर ने उसे देश की स्वाधीनता के लिए संसार में भेजा है। यदि उसमें इतना आत्मविश्वास न होता तो उसके वचनों की महत्ता एक साधारण सैनिक के वचनों से अधिक न होती। आत्मविश्वास तथा ईश्वरीय विश्वास के अभाव में वह कदापि चार्ल्स डाफिन्स के पास जाकर उससे फ्रेंच सेना के नेतृत्व का अधिकार नहीं ले सकती थी। आत्मविश्वास के बल पर ही वह चार्ल्स को यह समझाने में सफल हुई कि उस समय उसी के नेतृत्व में फ्रांस की सेना देश की रक्षा करने में कृतकार्य हो सकती है। उसके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि उसकी कमान में फ्रेंच सेना अवश्य ही विजय प्राप्त करेगी। जोन का यह प्रबल आत्मविश्वास ही उसके तथा देश के लिए वरदान सिद्ध हुआ। वह युद्ध की कला का क-ख भी न सीखी थी परन्तु आत्मविश्वास की अजेय शक्ति से उसने एक पराजित सेना को विजयिनी बनाकर छोड़ा। उसके पथ की बाधाएँ कुछ कम न थीं, परन्तु उनका उस पर तनिक भी प्रभाव न हुआ। उन सबको

दौड़कर वह आगे ही बढ़ती चली गई। नैपोलियन जैसा कोई भी पुरुष सैनिक शिक्षा के अभाव में उसके समान चमत्कार कर दिखाने में असमर्थ ही रहता परन्तु अप राजित आत्मविश्वास ने उस अशिक्षित बालिका को विजय का मुकुट पहना दिया।

पियरे जिस आत्मविश्वास के सहारे उत्तरी ध्रुव की खोज पर निकला उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। अनेकों बार प्राणों को हथेली पर लेकर उसे आगे बढ़ना पड़ा। उसका जलयान खण्ड-खण्ड हो गया संगी-साथी बिछुड़ गये पर वह अविचलित रहा। उसके अन्तःकरण में उत्तरी ध्रुव विद्यमान था। एक क्षण के लिए भी उसने उत्तरी ध्रुव के लक्ष्य से अपनी दृष्टि को न हटाया। अन्ततः एक दिन उसने उत्तरी ध्रुव को खोज ही लिया। पहाड़ों को भी हिला देने वाली शक्ति आत्म-विश्वास ही है। जिसका आत्मविश्वास जाग गया उसके लिए असम्भव काम भी सम्भव हो गया।

छोटे-छोटे पदों पर काम करने वाले मनुष्य संसार में अनेकों हैं। अपने अफसरों से अधिक योग्यता समझदारी व काम-कुशलता होते हुए भी वे आत्मविश्वास के अभाव में छोटे-मोटे स्थान पर ही पड़े सड़ते रहते हैं परन्तु जब कभी उन्हें अस्थायी रूप में किसी अधिकारी के स्थान पर काम करने का अवसर मिल जाता है तब उनकी शक्तियाँ जागृत हो उठती हैं और वे स्वयं चकित रह जाते हैं कि जिस पद पर कार्य करना वे अपने लिए असम्भव समझते थे, उस पद के कार्य को वे अनायास और अच्छी तरह से करने में समर्थ हैं। फिर उन्हें ऊँचा पद पाने में

कठिनाई नहीं होती।

जैसा आपका विश्वास होगा वैसा ही आपका जीवन बनेगा। जीवन को आशामय स्फूर्तिमय और उल्लास-मय बनाइये। फिर कौन-सा काम है जिसकी ओर सफलता-पूर्वक पग बढ़ाना आपके लिए कठिन है? जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने वाली बात है—संशय और आत्मविश्वास का अभाव। 'कहीं मैं असफल न हो जाऊँ' यह संशय मन से बाहर निकाल फेंकिए और आशा व विश्वास का जीवन जीना आरम्भ कर दीजिए। मनुष्य जब अपनी कार्यक्षमता पर सन्देह करता है, अपनी योग्यता का विश्वास खो देता है, तभी वह असफल होता है। जीवन को उसके वास्तविक रूप में व्यतीत करने की शिक्षा देने वाला सर्वोत्तम शिक्षक आत्मविश्वास ही है। आत्मविश्वास द्वारा ही मनुष्य की शक्ति के प्रवाह का अवरुद्ध द्वार खुल जाता है। किसी मनुष्य की सफलता का मूल्यांकन करना हो तो उसके आत्मविश्वास को तोलिए। डिजरायली ने अनेक बाधाओं को पार करके इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्रित्व को प्राप्त किया। उसका यह कथन कितना तथ्यपूर्ण है— 'मानव-जीवन का सर्वाधिक अपव्यय है, उसका स्वयं ही चिन्ता-ग्रस्त होना तथा जीवन में चिन्ता को मुख्य मानना।''

ध्वज का स्थान बहुत ऊँचा है। वह किसी देश की जनता की शक्ति का प्रतीक है परन्तु ध्वज वहीं तक आगे बढ़ सकता है, जहाँ तक उसके देश की जनता आगे बढ़ सकती है। यही बात मनुष्य के विषय में भी है। मनुष्य वहीं तक आगे बढ़ सकता है जहाँ तक बढ़ने का वह अपने

मन को विश्वास दिला सकता है। अन्य लोग आपको वही समझते हैं जो आप अपने आपको समझते हैं। लोग आपको उससे अधिक कुछ नहीं समझ सकते। किसी भी मनुष्य का मूल्य व महत्व संसार उतना ही समझता है जितनी उस मनुष्य में आत्मविश्वास और उद्देश्य-पूर्ति के लिए अचल निष्ठा हो।

मन के राज्य में विश्वास ही सेनापति है। सभी शक्तियाँ उसी की आज्ञा मान कर चलती हैं। जहाँ तक आत्मविश्वास आज्ञा संकेत अथवा प्रेरणा देता है वहीं तक वे अग्रसर होती हैं। जब तक नेता अटल है सेना भी अटल रहेगी। जब नेता ही भागने को तत्पर हो तो सेना कैसे टिक सकती है? ईश्वर की अपराजेय शक्ति से हमारा सम्बन्ध जोड़ने वाला विश्वास ही है। उस सम्बन्ध के जुड़ते ही सफलता हमारे चरण चूमने लगती है। विश्वास चिन्ता नहीं करता, वह अनुमान नहीं करता वह निश्चित रूप से जानता है कि वह जीवन का अमुक है। वह कभी पथ भ्रष्ट नहीं होता।

संसार में ईसाई मत की सबसे अधिक आलोचना हुई है। बाइबिल को मिटाने के सबसे अधिक प्रयत्न हुए हैं। इतना होने पर भी बाइबिल संसार में सबसे अधि बिकती है। अटल विश्वास ने ही ईसाई मत को आज त जीवित रखा है। निःशस्त्र ईसाई, जो रोमन साम्रा की अजेय शक्ति से लोहा लेने को प्रस्तुत थे, उनकी वीर की कल्पना ही की जा सकती है। अनेकों ने प्राण द पाया, अनेकों को हिंस्र पशुओं के आगे डाल दिया गया सम्राट नीरो के प्रासाद के सम्मुख अगणित व्यक्ति ज

डाले गये। परन्तु अन्त में रोम जल गया और वे वीर विजयी हुए। आत्मविश्वास की सफलताएं असाधारण होती हैं, उनकी गणना करना असम्भव है। वैज्ञानिकों एवं आविष्कारकों ने अगणित कष्ट सहन किए, परन्तु वे अपने उद्देश्य से विमुख न हुए, क्योंकि विश्वास के अजस्र स्रोत से उन्हें असामान्य सहनशीलता प्राप्त हो रही थी।

जितनी प्रबल आपकी आकांक्षा होगी, जितना दृढ़ आत्मविश्वास होगा उतनी ही सफलता पाने की सामर्थ्य आपमें आयेगी। बर्बर युग से निरन्तर आगे बढ़ती मानव सभ्यता को विश्वास का ही तो सहारा रहा है। विश्वास ही वह सोपान है जिस पर चढ़ कर मनुष्य सभ्यता की चोटी पर चढ़ पाया है, परन्तु विश्वास की प्रेरणा पर आगे पग बढ़ाने वाले मनुष्य इने गिने ही हैं। वास्तव में यह सत्य है कि जो व्यक्ति आत्मविश्वास तथा ईश्वर-विश्वास के भरोसे आगे बढ़ता है उसे सफलता मिलकर ही रहती है। अनेकों मनुष्यों की विफलता का कारण आत्मविश्वास का अभाव ही है। जगत् में सबसे कठिन काम अपने छिपे सामर्थ्य की खोज करके अपने मन में आत्मविश्वास का सम्पादन करना है। जब मानव को अपनी गुप्त शक्ति का ज्ञान हो जाता है, तब उसका सन्देह मिट जाता है, अन्तःकरण में विश्वास की जड़ जम जाती है और मनुष्य की समस्त प्रसुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं।

बाइबिल में आदि से अन्त तक विश्वास की ही महिमा का गान किया गया है। इसी के बल पर सिकन

अपने गौरवमय लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ। मोसिज' ने विश्वास के आधार पर ही लोगों को इयुए-इस के सघन वनों से पार करके ईश्वर की ओर से आने में सफलता प्राप्त की। 'ओल्ड टेस्टामेंट' में सभी पैगम्बरों ने विश्वास की ही शक्ति पर जोर दिया है। ईसा मसीह ने अनेकों बार कहा है— तुम अपने विश्वास के अनुसार ही फल पाओगे।' विश्वास तथा श्रद्धा को सबसे ऊँचा, गौरवमय पद दिया गया है। इन दोनों शब्दों का मनुष्य के मन पर जादू-सा असर पड़ता है।

हजरत ईसा मसीह ने लोगों को विश्वास दिलाते हुए स्पष्ट और बार-बार कहा—' जो मुझ पर विश्वास रखता है वह मेरे समान नहीं, अपितु मुझसे भी बढ़-चढ़कर गौरवमय काम कर सकता है।" विश्वास ही जीवन-ज्योति है जो अन्धकार में प्रकाश दिखाती है। विश्वास के अभाव से ही जीवन में संकट तथा असफलताएँ आती हैं। अपने आपको सुझाव देकर मनुष्य अपने मन के आत्मविश्वास की कमी को दूर कर सकता है।

आप प्रभु के पुत्र हैं। पिता को अपने पुत्र का निर्बल हुआ पसन्द नहीं। उसने आपको सफल होने के लिए जन्म दिया है। वह किसी को असफलता नहीं देता। अतः सन्देह द्वारा अपनी उच्च आकांक्षाओं को नष्ट मत कीजिए। उदास एवं निराश मुख लेकर अपने सखाओं के सम्मुख जाते हुए क्या आपको लाज नहीं लगती? संसार को अपने रहने के अयोग्य मत समझिए। जीवन में जो महान् कार्य पूर्ण करने की कामना आप करते हैं उसे तो ईश्वर ने पहले ही नियत कर दिया था। प्रभु की

मूर्ति आपके अन्तःकरण में ही विराजमान है उसकी शक्ति को अपने कार्यों में प्रकट करना आपका कर्तव्य है।" इस प्रकार की प्रेरणा तथा शक्ति प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास का पल्ला पकड़िए। अपने अस्तित्व को प्रकट करना अहङ्कार नहीं है। इससे तो आप अपने शरीर का अभिमान न प्रकट करके अन्तःकरण में विद्यमान प्रभु की सत्ता को प्रकट करते हैं। पर ध्यान रहे कि संकट में डगमगाने वाले आत्मविश्वास की कोई सार्थकता नहीं। एक दिन सफलता पाकर आशा के हिंडोले पर झूलना और दूसरे दिन असफलता पाकर मुँह लटका देना यह प्रकट करता है कि आपका विश्वास कच्चा है।

जीवन का विष क्या है? डर निराशा और सन्देह। जीवन का अमृत क्या है?—उत्साह शक्ति और आत्मविश्वास। सदा उच्च आकांक्षाओं के समर्थक मित्रों को हृदय में जगह दीजिए। उनकी सहकारिता में ही आपकी आशा आकांक्षाएँ मूर्त रूप में प्रकट होंगी।

मानव को जब उस प्रभु की शक्ति तथा उससे अपने सम्बन्ध को पहचान हो जाती है तब वह प्रबल आत्म विश्वासी तथा विजयी बन जाता है, तब संसार की समस्त शक्तियाँ उसकी सहायक बन जाती हैं। आत्मविश्वास और ईश्वरीय विश्वास संसार के गौरवमय अंग हैं। इन्हीं के आधार पर जीवन में असाधारण परिवर्तन होते हैं।



अन्तःकरण से वार्तालाप

संसार में कितने ऐसे लोग हैं जो अपनी आत्मा की आवाज को अपने शब्दों से प्रकट करते हैं ? मनुष्य जो कुछ चिन्तन करता है, उसी को शब्दों के रूप में प्रकट करता है। मनुष्य की नीरोगता, उसका स्वभाव, उसका आचरण उसके शब्दों से ही प्रकट होता है। यह सही है, मुख विचारों का दर्पण है परन्तु मानव की स्वस्थता व उसका जीवन उसके विचारों का प्रतिबिम्ब है। मुख से व्यक्त हुए प्रत्येक शब्द में ऐसा सामर्थ्य है जिसका जीवन के सभी अंगों पर प्रभाव पड़ता है।

शब्द की शक्ति को पहचान कर ही ईसा मसीह ने कहा था—"स्वर्ग तथा धरती मिट सकते हैं परन्तु मेरे शब्द अमर हैं। वास्तव में अन्तःकरण से निकले हुए शब्दों में समस्त भौतिक पदार्थों की शक्ति से अधिक शक्ति होती है। बाइबिल में शब्द के सामर्थ्य के गौरव को बताया गया है। जीवन को प्रेरणामय तथा सप्राण बनाने वाली शक्ति—शब्द-शक्ति ही है। मुँह से प्रकट किए गए शब्द में एक चमत्कार-पूर्ण बल होता है, जिसका मन पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जो कभी भी नहीं मिटता। अपने प्रण को बार-बार कहो—अपने विचारों को प्रकट

करो, इससे आपकी शक्तियाँ आपके यहाँ और जुट जाएँगी और उनसे आपको नवजीवन प्राप्त होगा।

इसी मनोवैज्ञानिक कारण से वेरडन की लड़ाई में फ्रेंच सैनिकों को विजय प्राप्त हुई थी। जनरल पेतां ने हर एक सिपाही के मन में यह मन्त्र फूंक दिया था कि जर्मनी की सेनाएं फ्रांस की भूमि में न घुस सकेंगी। सेना नायक के इस अदम्य विश्वास के कारण सैनिकों का सामर्थ्य दुगना चौगुना बढ़ गया। विजय की इन शब्दों में घोषणा विजय का मूलमन्त्र बनी। इन शब्दों के बल पर ही फ्रांसीसी सैनिक भीषण बम-वर्षा में भी मुस्कराते हुए, जीत की मस्ती में निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते चले गए। कठोर कैद अथवा मृत्यु का प्रत्यक्ष भय उनके विश्वास को परास्त करने में सफल हो सका। एक जर्मन डाक्टर ने कहा था—"मृत सैनिकों की मुखमुद्रा से भी स्पष्ट आत्मविश्वास झलकता था। मूर्छित हुए सैनिक भी यही बुदबुदाते थे—'जर्मन सेनाएं फ्रांस की धरती पर कदम नहीं रख सकतीं।" और अन्त में यही हुआ जर्मन सैनिक फ्रांस की भूमि में प्रविष्ट होने में असमर्थ रहे। अत: यदि आपके मन में भी इसी प्रकार सफलता का निश्चय हो जाए और आप उसे अपने शब्दों में प्रकट करते रहें तो निश्चय जानिए, आप अपने जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त कर देंगे।

शब्द ही हमारे विचारों के वाहन हैं। यदि हमारे शब्दों में प्रेम, सेवा तथा मत्री की भावनाएं भरी हैं तो उनसे दूसरों के हृदयों में भी उन्हीं भावनाओं का संचार होगा। पर यदि हमारे शब्दों में ईर्ष्या द्वेष, घृणा और

कर भरे हुए हैं तो वे दूसरों के मन में भी वैसी ही भावनाएँ जगा देंगे। अन्तःकरण के भावों से शब्दों को अर्थ प्राप्त होता है। आज तक मानव-सभ्यता का जो विकास हुआ है वह शब्दों द्वारा ही हुआ है। शब्द ही विचा की शक्ति द्वारा मानव की मनोकामनाओं को पूर्ण कर रहे हैं। जिस प्रकार प्रभु ने कहा और धरती बन गई, उसी प्रकार मनुष्य ने भी जो कुछ कहा वही बन गया। आवश्यकता इस बात की है कि शब्दों के पीछे दृढ़ विचार शक्ति का बल हो।

मन में कहे शब्दों में जो शक्ति है मुँह से व्यक्त किए शब्दों में उससे भी कहीं अधिक शक्ति है। मुँह से शब्द के रूप में प्रकट हुए विचार, मन पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ जाते हैं। उदाहरणतः किसी उत्कृष्ट भाषण को सुनकर चित्त पर जो प्रभाव पड़ता है वह किसी ग्रन्थ को पढ़कर नहीं पड़ता। पुस्तक में लिखित शब्दों को पढ़कर हम भूल भी सकते हैं, परन्तु कथित शब्दों को भुलाना थोड़ा कठिन हो जाता है, ऐसा इसलिए होता है कि यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। पठित शब्दों का भी मन पर प्रभाव होता अवश्य है पर उतना नहीं जितना श्रुत शब्दों का। महान् पुरुष अपने प्रवचनों से लोगों के जीवन में आमूल परिवर्तन कर देते हैं। उसका यही रहस्य है। यही नहीं कि दूसरों के कहे शब्द ही हमारे हृदय पर अमिट प्रभाव डालते हों अपितु हमारे अपने कहे शब्द या अपने किए हुए प्रण भी हमारे हृदय-परिवर्तन में समर्थ होते हैं उनके द्वारा हमारे हृदय की बुराइयाँ दूर हो सकती हैं।

यदि हम अपने आपसे प्रत्यक्ष व प्रकट शब्दों में आत्म सुधार का प्रण करें तो उसका हमारे मन पर जादू-सा प्रभाव होता है। यही शब्द-शक्ति मानव-जीवन की काया पलट कर देती है।

यह अनुभव सिद्ध बात है कि यदि हम चाहें तो अपने मन से वार्तालाप कर सकते हैं। मन, बातों को सुनता तथा स्वीकार भी करता है। आवश्यकता इस बात की है कि मन से मौन रूप से बात न कहकर प्रकट शब्दों में कहें। प्रकट कहने से मन पर द्विगुणित प्रभाव होता है। यदि हमारे शब्दों में सत्य है तो उससे हमारा चरित्र तथा जीवन सुधर सकता है। घोर निराशा एवं असफलता में भी, बहुत-से लोग अपने अन्तःकरण से वार्तालाप करके ही असाधारण सफलता और विजय प्राप्त कर चुके हैं। एक व्यक्ति लज्जा, संकोच तथा हीन भावना से ग्रस्त था। वह लोगों के सम्मुख आने व बात करने से कतराता था। उसमें आत्मविश्वास तो था ही नहीं, साथ ही उसे यह भ्रम था कि वह स्वयं छलिया है परन्तु वास्तविकता यह थी कि वह एक ईमानदार तथा परिश्रमी व्यक्ति था। अकस्मात् एक दिन उसे एक नई विचारधारा की पुस्तक प्राप्त हुई। उसके अध्ययन से उसे एक नवीन प्रकाश की किरण दिखाई दी। उस पुस्तक में यह सुझाव था कि अपने आपको उत्साहित करने से मनुष्य शक्ति-शाली हो जाता है विशेषतः प्रकट शब्दों में उत्साहित करने से। उस पुस्तक की बातों को ठीक मानकर उसने उन पर आचरण करना आरम्भ कर दिया। उसने नित्य प्रति अपने आपसे वार्तालाप करने का

स्वभाव बना लिया। कुछ ही दिन उपरान्त उसे अपने विचारों एवं भावों में अद्वितीय परिवर्तन होता दिखाई देने लगा उसे अपनी शक्तियां विकसित होती हुई प्रतीत होने लगीं। धीरे धीरे उसमें इतना परिवर्तन हुआ कि वह न केवल सभाओं में भाषण करने लगा अपितु उनका अध्यक्ष भी बनने लगा। उसका सकुचालु स्वभाव सर्वथा बदल गया उसका अविश्वास दूर हो गया और उसे अपनी योग्यता एवं क्षमता पर तनिक भी सन्देह न रहा। निरन्तर आत्म-सुझावों द्वारा संसार की बड़ी से बड़ी दुर्बलता दूर हो सकती है। आत्मसुझाव की प्रक्रिया से अनेक मानसिक शक्तियों को जागृत एवं सप्राण किया जा सकता है। हमारे भीतर बारूद की भांति अनेकों शक्तियां प्रसुप्तावस्था में विद्यमान रहती हैं। उन्हें आत्मसुझाव रूपी दियासलाई लगाने की आवश्यकता होती है।

भय सन्देह व उत्साह-हीनता को दूर भगाकर आत्म विश्वास की स्थापना के लिए ये शब्द अमूल्य हैं— "मैं इस काम को अवश्य पूरा करूंगा मुझमें इस काम के करने का सामर्थ्य है मैं इसे करके ही रहूंगा।

आपको यदि अपनी वर्तमान उन्नति से असन्तोष है, यदि आप समझते हैं कि आपने अपने आदर्श के अनुरूप प्रगति नहीं की कोई ऐसी रुकावट है जो आपको आगे नहीं बढ़ने देती तो उस रुकावट को खोज निकालिए और उसे खोजने का सर्वोत्तम मार्ग अपने आपसे वार्तालाप ही है। अपने अन्तःकरण में दृष्टि डालिए, आत्म-सत्ता स्वीकार कीजिए, अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं एवं शक्तियों को पहचानिए, इसके अनन्तर किसी एकान्त स्थल में स्थि

बैठिए और अपने से कहिए—"तुम्हारे आगे बढ़ने में, उन्नति करने में क्या बाधा है ? तुम्हें अपना लक्ष्य क्यों नहीं प्राप्त हो रहा है ? तुम अपने सहकारियों से क्यों पिछड़ रहे हो ? तुम सामान्य-सा जीवन क्यों व्यतीत कर रहे हो ? क्यों तुमसे कम योग्यता वाले तुमसे आगे बढ़ रहे हैं ? क्या तुम्हारी कोई विशेष दुर्बलता तुम्हारे प्रगति-मार्ग में बाधक है ? उस बाधा को खोज करो और उसे शीघ्र दूर कर दो अन्यथा तुम्हारा विकास रुक जाएगा।

एक सूची बनाइए जिसमें एक ओर सफलता तथा दूसरी ओर असफलता के कारण लिखे हों जैसे—

सफलता	असफलता
उत्साह	अनुत्साह
साहस	साहसहीनता
धीरता	अधीरता
प्रसन्नता	उदासी
आशा	निराशा
उच्चाकांक्षा	हीन भावना
आत्मविश्वास	आत्मविश्वास का अभाव

अब दोनों ओर के गुण-दोषों पर विचार कीजिए। जो-जो गुण या दोष आप में हैं उन पर चिह्न लगाइए। आप अब देखिए कि गुण अधिक हैं अथवा दोष ? बस आपको शीघ्र ही पता लग जाएगा कि आप कहाँ हैं ? आपकी उन्नति के मार्ग को किसने रोक रखा है ? इसके बाद दोषों को दूर करने का प्रयत्न करके गुणों को अपना

तथा मात्रा बढ़ाइए और फिर देखिए सफलता पाते हुए कितनी द्रुत गति से आप अपने उद्देश्य के पास पहुँचते दिखाई देंगे।

अपनी हीन भावना को दूर करने के लिए अपने आप से इस तरह वार्तालाप कीजिए —

'मैं प्रभु का पुत्र हूँ। मेरे अन्दर प्रभु के गुणों का असीम भण्डार है। उस दिव्य शक्ति के बल पर मैं जिस वस्तु की सिद्धि चाहूँ प्राप्त कर सकता हूँ। मैं सफलता का साकार रूप हूँ, मैं शक्ति हूँ, मैं योग्यता हूँ। मैं कायर नहीं हूँ, फिर मुझे पिछड़ने की क्या आवश्यकता है? मैं इच्छानुकूल मनोरथ को पाने में समर्थ हूँ। मैं भविष्य में अपने आपको हीन मानकर अपने भीतर ईश्वरीय शक्ति का अनादर न करूँगा। अपने को तुच्छ, अकमण्य व शक्तिहीन मानना प्रभु का अपमान है, उसके प्रति अप राध है क्योंकि मैं उसी का एक अंश हूँ। मैं सर्वशक्ति-मान् महाराजाधिराज की सन्तान हूँ मैं राजकुमार हूँ। मैं अब किसी भी कर्तव्य कर्म से अथवा उत्तरदायित्व से चित्त नहीं चुराऊँगा। मेरी योग्यता किसी से कम नहीं है इस सत्य को मैं कभी न भुलाऊँगा। यदि मैं जीवन संघर्ष में आधा आत्म विश्वास बल और बुद्धि को साथ लेकर जूझ जाऊँगा तो मुझे विजय-श्री अवश्य ही वरण करेगी। अपनी निन्दा आप नहीं करूँगा, इस बात का व्रत लूँगा। मैं अपने पर विश्वास करूँगा क्योंकि अपने पर विश्वास भगवान् पर विश्वास है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने का मेरा पूर्ण अधिकार है।'

इस प्रकार अन्तःकरण से वार्तालाप करके जीवन

एक आश्चर्यजनक परिवर्तन लाया जा सकता है। उत्साह, साहस, मनःप्रसाद और आत्मविश्वास—जो गुण भी कम हो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

अपने आपसे कहिए—"दृढ़ निश्चय से शक्ति प्राप्त होती है। दृढ़ निश्चय में मेरा अटल विश्वास है।'

मारसन ने दैनिक अभ्यास के लिए यह प्रतिज्ञाएँ निश्चित की थीं—

१ मैं सबसे गौरवशाली बनूँगा।

२ मैं जीवन में और अधिक सफलता पाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मैं पा सकता हूँ।

३ मैं अपने में तथा दूसरों में गुण ही देखूँगा।

४ मैं संकट आने पर द्विगुणित शक्ति एवं गति से कार्य करूँगा। प्रत्येक संकट को सुअवसर बना डालूँगा।

५ मैं उन्हीं कार्यों पदार्थों तथा सफलताओं की आकांक्षा करूँगा जिनसे मनुष्य जाति सत्य एवं स्वाधीनता के मार्ग पर प्रगति कर सके।

६ मेरे शब्द सदा उत्साह जनक साहसप्रद स्फूर्तिदायक प्रेरणात्मक तथा हृदयस्पर्शी होंगे।

७ मैं सर्वदा जन जन के उपकार के कार्य करूँगा।

इस प्रकार अपने आप की महिमा तथा गौरव की जब आप घोषणा करेंगे तब 'मैं' अहंकार का दास नहीं रह जाएगा। तब उसका आध्यात्मिक और सात्विक रूप प्रकट होगा। 'मैं' का अर्थ 'मेरा शरीर' लेकर उसकी घोषणा करना है। उससे जीवन को लाभ नहीं प्राप्त हो सकता हानि भले ही हो। परन्तु जब हम अपने दवी रूप की स्थापना करते हैं अपने आत्मिक स्वरूप को प्रकट

करते हैं तब 'मैं' का अर्थ आत्मा होता है, आत्मा—विश्वात्मा से पृथक नहीं।

हमें अपनी प्रतिज्ञा की असीम शक्ति का ज्ञान लेना चाहिए। हम इस महामन्त्र का बार-बार जप करना चाहिए—

'मैं सर्वशक्तिमान् परमात्मा का एक अंश हूँ। वह संसार का स्रष्टा है। आत्मा एवं परमात्मा में अभिन्नता है फिर मैं दुर्बल और अशक्त कैसे हो सकता हूँ?' इस महामन्त्र को बार-बार दोहराने से सीमातीत रूप में प्राप्ति हो सकती है। प्रतिज्ञा की शक्ति महान् है गौरवमयी है सीमातीत है। बाइबिल का इतना गौरव इसी कारण से है क्योंकि वह इसी प्रकार की प्रतिज्ञाओं से परिपूर्ण है।

संसार के गौरवशाली दार्शनिकों विचारकों एवं लेखकों को कभी भी प्रमाणों से अपनी बात को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उनका आत्मविश्वास ही उनकी सबसे महान् दलील होती है। यदि अपनी बात सिद्ध करने के लिए वे भी युक्तियों का सहारा लेते तो शायद ही लोग उनका विश्वास करते। विश्वासपूर्वक कहे शब्दों पर सन्देह होना कठिन होता है। आत्मविश्वासी मनुष्यों के शब्दों में ऐसा बल रहता है कि लोग उसे सत्य मानकर उस पर आचरण करने को तत्पर हो जाते हैं। अपने आपसे वार्तालाप करके आप भी ऐसे आत्मविश्वास का सम्पादन कर सकते हैं। भय, संकोच, घबराहट छोड़िए मत कहिए कि मैं प्रयत्न करूँगा, अपितु दृढ़ विश्वासपूर्वक कहिए कि मैं इस कार्य को अब

य कर सकता है।

अपनी आत्मा को ऊँचे धरातल पर प्रतिष्ठित करके ही आप अपने ईश्वरीय रूप को प्रकाशित कर सकते हैं। परमात्मा से आत्मा की अभिन्नता की अनुभूति होने पर ही हम उन कार्यों को करने लगते हैं जिन्हें वह हम से कराना चाहता है। तब हम अपनी दैहिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के पथ की किसी भी बाधा को परे हटा सकते हैं। बीता हुआ समय फिर नहीं लौटता, अतः हम उचित समय के अन्दर अपने कार्य को सम्पूर्ण करने की क्षमता पा सकते हैं।

स्मरण रहे कि आपके शब्दों को आपकी आत्मा से बल प्राप्त होता है और आत्मा को शक्ति, शक्ति के उस परम स्रोत—परमेश्वर से प्राप्त होती है।

जिन शब्दों का आप मुख से उच्चारण करते हैं उनको आप अन्तःकरण से सत्य स्वीकार नहीं करते तो आपके वे शब्द सर्वथा निर्जीव हैं। आपके प्रत्येक शब्द के पीछे आपकी सम्पूर्ण मानसिक शक्ति का बल आपकी आत्मिक शक्ति का पूरा समर्थन आवश्यक है।

परमेश्वर की दृष्टि में सब मनुष्य समान हैं। वह पिता है वह सबको समान रूप से प्रेम करता है वह किसी का भी पक्षपात नहीं करता वह सबको एक जैसे अधिकार एवं वरदान देता है। कर्म करने वाले की इच्छा पूर्ति वह अवश्य करता है। अतः अपने इष्ट कार्यों की पूर्ति के लिए उसका वर प्राप्त कीजिए।

अपने प्रण को हर समय दोहराइए, उन्हें पूर्ण करने के लिए प्रयत्न में जुट जाइए। अवसर स्वयं फिर कभी

नहीं आएगा, उसे आप ही लाएँगे। उस समय आपकी प्रतिभा का चमत्कार प्रकट होगा। जितनी बार आप प्रतिज्ञा को दोहराएँगे उतनी ही बार आपकी शक्तियों में वृद्धि होगी। आपकी चाहे कोई निन्दा करे या स्तुति आप अपने लक्ष्य को मत छोड़िए। लाखों लोग भी विरुद्ध रहें तो भी अपने उद्देश्य को मत भुलाइए, अपने पथ पर अविश्वास मत कीजिए, आपको संसार में जो काम करना है वह आप से ही सम्पन्न हो सकेगा दूसरों के भरोसे पर उसे मत छोड़िए। अपने सामर्थ्य की संभावनाओं को पहचानिए। अपने को भली भाँति पहचानिए, यही जीवन को ऊँचा उठाने की सर्वश्रेष्ठ विधि है। अपने आप से एक अन्तरंग सखा की भाँति वार्तालाप करके ही आप अपने को पहचान सकते हैं क्योंकि इसी प्रक्रिया से आप अपनी त्रुटियों को दूर करके महान् गुणों से परिचय प्राप्त करते रहते हैं।

एडिसन के मित्रों ने उससे शराब पीने का आग्रह किया तो उसने कहा—'मैं अपने शरीर तथा मन की सम्पूर्ण शक्तियों से पूर्ण लाभ प्राप्त करने की आकांक्षा रखता हूँ अतः शराब को मैं छू भी नहीं सकता क्योंकि इससे मेरी शक्तियाँ कुंठित हो जायेंगी और मेरा भविष्य अन्धकार-मय हो जाएगा।'

बुराई से भयभीत होने अथवा निराश होने की आवश्यकता नहीं। ऐसी कोई बुराई नहीं जो दृढ़ विचार तथा पूर्ण निश्चय से दूर न की जा सकती हो। प्रत्येक मनुष्य के तन-मन में एक ऐसी शक्ति है जो बुराई से कभी तो कभी भी उससे परास्त नहीं हो सकती। ईश्वर

सब में है और ईश्वरीय गुण भी सब में हैं। बुराई का अन्धकार ईश्वरीय-ज्योति से पल भर में छिन्न भिन्न हो जाएगा। संदिग्ध मन से कार्य करना और सफलता की कामना करना परस्पर-विरोधी बातें हैं। आवश्यक कार्यों को भूलने की आदत, हर बात में बाधा करना, वहमीपन, ये सब दुर्गुण हैं जो ईश्वरीय शक्ति के विश्वास के अभाव में बढ़ते हैं। जिस कार्य की आकांक्षा आपके हृदय में है, जिस कार्य का समर्थन आपकी अन्तरात्मा करती है उस पर सोच विचार मत करो, दुविधा में पड़ना कोई गुण नहीं बल्कि बुराई है जो सुनहले भविष्य को अन्धकारपूर्ण बना देती है।

आपका आदर्श ही आपका लक्ष्य है फिर भी यदि किसी व्यक्ति को ही आदर्श रूप में प्रतिष्ठित करना हो, तो किसी ऐसे व्यक्ति को अपना आदर्श बनाओ जिसकी कार्यकुशलता दृढ़ निश्चयता तथा आत्मविश्वास की सभी प्रशंसा करते हों। कार्य करते हुए आरम्भ में भूलें होने की संभावना है। पर इससे घबराने की आवश्यकता नहीं। घबराकर पीछे पग रखना कायरता है। अपने आपसे यै शब्द कहिए—

"मैं पीछे नहीं हटूंगा।"

परन्तु केवल शब्द कहना मात्र ही पर्याप्त नहीं, उसके पीछे अपनी सम्पूर्ण इच्छा-शक्ति को भी नियोजित कर दीजिए।

सदा अपनी विजय की कामना कीजिये। सदा अपनी जीत की कल्पना कीजिये सदा अपने उदय का विश्वास रखिये। आपके मुखमण्डल से, आपके नेत्रों से,

स्वामी के कर्मचारी सामर्थ्य और स्वरूप का ज्ञान होने पर महान् से महान् क्रान्ति के अगुआ बन सकते हैं। अपनी शक्ति के गौरव का ज्ञान हो जाने पर मनुष्य खुशामदी जी-हुजूर और दास बनकर कभी नहीं रह सकता। उसमें उन्नति की ऊँची आकांक्षाएं ठाठें मारने लगती हैं। तब मानव में अभूत-पूर्व परिश्रम करने की सामर्थ्य जागृत होती है।

आज आप क्या हैं इसका कुछ महत्व नहीं महत्व इस बात का है कि आप भविष्य में क्या बन सकते हैं। कोई भी मनुष्य अपनी जमा-पूँजी को घाटे के व्यापार में लगाने को तैयार नहीं होगा। जो प्रगति नहीं कर रहा वह स्वयं अपने कार्य और परिणाम से सिद्ध कर रहा है कि उसने अपनी पूँजी को लाभ के काम में नहीं लगा रखा। मनुष्य के अन्तःकरण में जो पूँजी है उसका मूल्य धन की पूँजी से बढ़ चढ़कर है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि मनुष्य उसका प्रयोग करे और ऐसे काम में प्रयोग करे जो लाभ का हो। जिस व्यक्ति के पास बैंक में पर्याप्त राशि जमा हो और वह समझता रहे कि वह अपना छोटा-सा कर्जा नहीं उतार सकता ठीक ऐसी ही स्थिति उस व्यक्ति की है जो यह समझे बैठा है कि वह अशक्त है। हरएक व्यक्ति के अन्दर विभिन्न योग्यताओं की अपार पूँजी है परन्तु इस पूँजी का लाभकारी कार्यों में जब तक उपयोग नहीं होता तब तक उसके द्वारा किसी लाभ की आशा नहीं की जा सकती। इतनी अपार पूँजी रखने पर भी मनुष्य दीनतामय जीवन व्यतीत करे तो क्या उस पर आश्चर्य न होगा?

अपने आन्तरिक गुणों की पूँजी को व्यक्त करने एवं लाभकारी कार्यों में उसका व्यास करने का क्या आपने कभी प्रयत्न किया है ? स्मरण रहे कि व्यास के बिना लाभ कभी हो ही नहीं सकता। अपने व्यक्तित्व को गौरवमय बनाइये। अपने व्यक्तिगत गुणों को उभारिए। अपने जीवन का एक निश्चित कार्य क्रम बनाइए, योजनानुसार काय कीजिए। इससे आपकी वे शक्तियाँ जो निष्क्रिय पड़ी थीं सक्रिय हो जाएँगी वह प्रतिभा जो प्रसुप्त थी, उद्बुद्ध हो उठेगी। यह नहीं कि उन शक्तियों का आपको बिल्कुल ही ज्ञान न हो। किन्हीं विशेष अवसरों पर आपको उन शक्तियों का आभास तो अवश्य मिलता है, परन्तु अचानक बिजली की तरह चमक कर उनका ज्ञान फिर विलीन हो जाता है। एक बार अन्त - प्रेरणा से उन शक्तियों को जागृत कर लो तो फिर संसार की ऐसी कोई बाधा नहीं जो आपका मार्ग रोक सके।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि जिन व्यक्तियों ने अपनी महत्ता को पहचान लिया, वे हीन दशा से उठकर उन्नति कर गए हैं। वे समाज विरोधी कार्यों को छोड़कर समाज-हित के कार्यों में लग गए हैं। वे तेज-पुंज बनकर समाज के आकाश में प्रकाश फैलाते हैं और उनके प्रकाश से नवीन चेतना, स्फुरण, नवोत्साह प्राप्त करके मार्गों आत्माएँ उन्नत हुई और हो रही हैं। आत्म-शक्ति के अज्ञान और विस्मरण का नाम ही दुर्बलता है अन्यथा मानव तथा दुर्बलता का कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं क्योंकि मानव जड़ नहीं चेतन है, यही नहीं, वह सर्वश्रेष्ठ चेतन है।

अगणित विद्वान् विजयी, वीर तथा महान् पुरुष जीवन में महान् कार्य करने में कब किस प्रकार सफल हुए? तभी जब उन्हें अपनी शक्तियों का ज्ञान हुआ और उन्होंने उन शक्तियों का प्रयोग किया। जिस दिन उन्हें अपनी गुप्त शक्तियों का ज्ञान हुआ उसी दिन वे तुच्छ जीवन को त्यागकर महानता की ओर अग्रसर हुए। केवल उन लोगों से ही ऊँचे तथा आदर्श जीवन की आशा की जा सकती है जिन्हें अपने वास्तविक स्वरूप एवं शक्तियों का ज्ञान हो चुका है। इस समय मानव संसार को वकीलों डाक्टरों तथा राजनीतिज्ञों की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी सत्प्रेरणादायक महान् पुरुषों की है। आज मानव-संसार को ऐसे महान् पुरुषों की आवश्यकता है जो मानवता के आदर्शों के मूर्त रूप हों जैसे अब्राहम लिंकन था।

संभव है भेड़ों से घिरे रहने के कारण ही आप अपने आपको भी भेड़ समझने लगे हों परन्तु चिन्तन के किन्हीं क्षणों में आपको अपने वास्तविक स्वरूप की अनुभूति तो अवश्यमेव होती होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो आप तनिक एकान्त में चिन्तनशील होकर अपनी आत्मा की पुकार को सुनने का प्रयत्न कीजिए। केवल एक बार आप उस ध्वनि को सुन सकें तो आपकी गुप्त-सुप्त शक्तियां प्रत्यक्ष एवं जागृत हो उठेंगी। आधुनिक काल का यही जीवन-संदेश है कि मानव की प्रसुप्त शक्तियों को जागृत किया जाना चाहिए। एक बार इस चिनगारी को फूँकने की आवश्यकता है फिर इसे प्रचण्ड ज्वाला बनते देर नहीं लगती। फिर उसी हीन मनुष्य के अन्दर

से सिंह पराक्रमी कर्म-परायण प्रकट होता है। आत्म-विश्वास का सूर्य उदय होते ही निराशा अन्धकार और हीनता के बादल छिन्न भिन्न हो जाते हैं।

आपको विदित ही है कि गत सहस्रों वर्षों से भौतिकी एवं रसायन-शास्त्र के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फिर भी अनेकों ऐसे नए वैज्ञानिक हुए हैं जो नवीन आविष्कारों में सफलता प्राप्त करके असीम ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। बरसों पहले जो उपकरण सर आइजक न्यूटन के पास थे, वे ही टामस एल्वा एडीसन के पास भी थे, परन्तु उन्हीं उपकरणों का प्रयोग करके एडीसन ने अनेकों नए आविष्कार किए। हम प्रतिदिन पत्रों में किसी न किसी नवीन आविष्कार का समाचार पढ़ते हैं जिससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की शक्तियों की कोई सीमा नहीं उनका कहीं अन्त नहीं। केवल उनको एक बार जागृत करके कार्य में लीन कर देने की आवश्यकता है।

यह है वह नवीन दर्शन जो मनुष्य को प्रबुद्ध कर देता है। वह उसे कार्य में नियोजित कर देता है। इसी के द्वारा मनुष्य अपने लिए उस सफलता के क्षेत्र की खोज करने में सफल होता है जो उसके लिए असम्भव स्वप्न मात्र थी। हमारे जीवन में जो असन्तोष का भाव है वह इस बात का प्रतीक है कि हम इतनी उन्नति नहीं कर पाए, जितनी कि हमें करनी चाहिए। जब तक हमें सन्तोष नहीं प्राप्त होता, तब तक हम उसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। जब हमारा अन्तःकरण प्रेरणा को ग्रहण कर लेता है उसी क्षण हमें यह स्पष्ट

अनुभूति होने लगती है कि हमारे भीतर एक गौरवमय व्यक्तित्व गुप्त रूप से स्थित है जो यदि प्रकट हो जाए, तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं रह जाता।

बहुत-से लोग जन्म भर किसी चमत्कार या जादू की ही प्रतीक्षा में रहते हैं। ऐसा कोई अलादीन का चिराग नहीं जो बिना ही शक्ति का न्यास (Invest) किये आपकी मनोकामनाओं को पूर्ण कर दे।

यदि आप भी अब तक किसी ऐसे जादू की खोज में हैं तो इस भ्रम को अब दूर कीजिये। मनुष्य के बाहर कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उसकी कामना-पूर्ति कर सके और आत्मा को तृप्ति दे सके। ऐसी शक्ति यदि कहीं है, तो वह आत्मा में ही है। मनुष्य को तुच्छ कौन बनाता है?—आत्म प्रेरणा का अभाव। जहाँ आत्मप्रेरणा हुई कि मनुष्य की अजस्र शक्तियों के स्रोत फूट जाते हैं और प्रबल वेग से प्रवाहित होते हुए जीवन के कूड़े को बहा ले जाते हैं। आत्म प्रेरणा की अजस्र धारा ही आकांक्षाओं को मूर्त रूप प्रदान करती हुई आत्मा को तृप्ति एवं सन्तोष प्रदान करती है।

हम ईश्वरीय शक्ति के एक अंश हैं, उस शक्ति से भिन्न या पृथक नहीं। सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्ति हमारे अन्दर उसी प्रकार आ सकती है जिस प्रकार बिजली के तार में करेंट। आवश्यकता केवल तार को जोड़ने की है। आत्म प्रेरणा की स्फुरणा जिस दिन हुई वही दिन जीवन का लक्ष्य की ओर अग्रसर होने का दिन होगा।



शरीर का अणु अणु सोचता है

विज्ञान की नूतन खोजों से यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य का मस्तिष्क ही विचार नहीं करता, अपितु उसका अङ्ग प्रत्यङ्ग प्रत्येक सैल हरएक अणु विचार करता है। वैज्ञानिक प्रयोगों से स्पष्ट करके दिखा दिया है कि मानवी देह के किसी अङ्ग को काटकर यदि मारक विष के पास रखा जाय तो वह कटा हुआ अङ्ग उस विष से दूर होने की कोशिश करता है और किसी लाभकारी औषध के समीप रखने पर वह अङ्ग उसके पास आकर्षित होता है।

शरीर का अणु अणु विचार करता है इसलिए माया, हर्ष, डर अथवा दुःख का सारे मनुष्य शरीर पर प्रभाव होता है। डा० चैसी ने बताया है कि आवश्यकता के अनुसार पशु के शरीर में परिवर्तन आ जाते हैं। जिराफ की गर्दन लम्बी क्यों हुई? इसका कारण यह है कि जिराफ के पूर्वजों को अपनी खुराक के लिए घास की अपेक्षा पेड़ों के पत्तों पर आश्रित रहना पड़ता था। उनके अणु-अणु विचारवान् थे उन्होंने उसकी चारों टांगों को ऊंचा उठाकर लम्बा कर दिया जिससे वह पत्तियों तक पहुंच सके। पत्तियों तक मुंह न पहुंचा तो गर्दन को

लम्बा करना आरम्भ किया और होते-होते वह खूब लम्बी हो गई। इसी प्रकार की आवश्यकता को अनुभव करते हुए हाथी के परमाणुओं ने उसकी नाक को बढ़ा कर उसे सूँड का स्वरूप दे दिया क्योंकि इतने ऊँचे शरीर से ऊपर लगे मुँह का धरती तक पहुँचना कठिन था। इसलिए सूँड के अग्रभाग में उँगली भी लगा दी गई कि जिससे वह वस्तुओं को पकड़ सके। शरीर में किसी भी अंग की वृद्धि की आवश्यकता पड़ने पर अणु स्वयं अपने आकार में वृद्धि नहीं करते वे आगे-आगे तेजी से अधिक-अधिक भागों में विभक्त होते जाते हैं और इस प्रकार उनकी संख्या बढ़ती जाती है इसी से शरीर के उस अङ्ग का विकास होता है। डा० क्लेमी का कथन है कि अणुओं के बढ़ने से उनमें सविवस शीलता प्रत्यक्ष देखी जा सकती है। अणुओं में यह गुण उनके पूर्वजों से आया है। पहले अणु अपने बाद में आने वाले अणुओं को यह गुण उत्तराधिकार में दे देते हैं। इस प्रकार यह गुण क्रमानुक्रम से चला आया है। हमारे विचार में शरीर भिन्न भिन्न अङ्गों का समूह है। जब हम ऐसा सोचते हैं तो हम यह मान कर चलते हैं कि शरीर का हर अङ्ग स्वाधीन है और अन्य अङ्गों से पृथक कार्य करता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि शरीर अणुओं का संगठित पुंज-मात्र है। इसके अणु अणु में स्वाधीन रूप से सोचने की शक्ति है वह विचार करता है। सारे शरीर की रचना में वे संगठित होकर काम करते हैं।

सम्पूर्ण अङ्गों का अधिनायक मन है—इसे ही 'मैं' कहते हैं। इसी के अनुशासन में सब अङ्ग चलते हैं।

शरीर स्वस्थ है या रोगी, इसका विचार यही अङ्गों को देता है। यह 'मैं' चाहे तो अङ्ग प्रत्यङ्ग में आशा का संचार करे और चाहे तो उन्हें निराशा से भरकर अकर्मण्य बना दे। 'मैं' से जो विचार या भाव बसते हैं वे सबके सब जीवाणुओं पर अपनी गहरी छाप डालते हैं।

शल्य-चिकित्सकों का कथन है कि युद्ध में विजयी होने वाले घायल सैनिकों के व्रण शीघ्रता से भर जाते हैं, अपेक्षा उनके कि जो साधारणतया किसी कारण से घायल हुए हों और पराजित सेना के घायलों के व्रण तो बहुत ही देर बाद भरते हैं। मन का उत्साह, हर्षोत्फुल्लता और अपनी जीत का विचार शरीर को नीरोग करने में सबसे अधिक सहायक है।

यह एक सत्य है कि प्रत्येक जीवाणु मस्तिष्क का ही एक लघु, परन्तु महत्वशाली अंश है। हर एक जीवाणु मानो एक छोटा-सा पावर स्टेशन है जिसका तार मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है। अतः मन में आई क्रोध, ईर्ष्या अथवा घृणा की छोटी-से-छोटी भावना फौरन अणु-अणु से प्रकट होने लगती है। मन के दुःख से हर एक अणु दुःखी होता है। मन के हर्ष से हर एक जीवाणु हर्षित होता है। उसके समर्थन के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं क्योंकि हम जानते हैं कि मन जब आशा, उत्साह और हर्ष से भरा हुआ होता है तब सारा शरीर फूल-सा हलका तथा नीरोग दिखाई पड़ता है। उस समय उसकी कार्य-क्षमता भी बहुत अधिक बढ़ी हुई होती है। मन यदि निराशान्धकार से दबा हुआ होता है तब मन की कार्य-शक्ति कुण्ठित हो जाती है तब उसका उत्साह

मारा जाता है उसका उत्साह समाप्त हो जाता है।

शल्य चिकित्सकों ने अन्वेषण करके बताया है कि कई नासूर केवल मन की निराशा से उत्पन्न होते हैं। जिनके शरीर नासूर के भय से रहित हों, वे भी यदि निराश या चिन्तातुर रहें तो नासूर की आशंका बन जानी चाहिए। इस खोज का समर्थन एक उदाहरण से हो जाता है कि युद्ध में जिन लोगों के प्रियजन काम आते हैं उनमें शोक ही नासूर का कारण बन जाता है।

धमनी के अनेकों रोग अथवा महत्व रोग हृदय-रोग या मस्तिष्क के रोग—ये प्रायः ईर्ष्या एवं घृणा के कारण जन्म लेते हैं। इस प्रकार की दूषित भावनाओं द्वारा मनुष्य के लहू में एक प्रकार का जहर-सा निरन्तर घुलने लगता है। उससे शरीर के बल साहस तथा उसकी कर्मठ्वा को कीड़ा लग जाता है। किसी भी रोगी के स्वस्थ होने में निराशा एवं एकाकोपन से अधिक हानिकर और कुछ नहीं। विचार करना चाहिए कि मन में निराशा अथवा शोक की भावना ममता भावना तक ही सीमित नहीं रहता। अपितु उससे आरोग्य और रूप का क्षय होता है। चिन्ता एवं निराशा धीरे-धीरे करके शरीर के अणुओं के साहस को उनके आरोग्य को नष्ट कर देती है। इनसे तरीर में गड़बड़ी फैल जाती है उसका क्रम विद्रत्व हो जाता है। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की खबर सुनकर कुछ लोग बेहोश हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि शोक केवल हृदय पर ही नहीं शरीर पर भी बहुत बुरा प्रभाव डालता है। दशरर मूर्छित हुआ इसका तात्पर्य वास्तव में यह है कि

शरीर का अणु-अणु मूर्छित हो गया। इसके विपरीत किसी सुखदायक समाचार से मन ही प्रफुल्ल नहीं होता, बल्कि तन भी खिल उठता है। मन प्रसन्न होते ही शरीर का अङ्ग-प्रत्यङ्ग, नहीं नहीं, प्रत्येक अणु एक नई स्फूर्ति एक नई हिम्मत, एक नए बल का अनुभव करने लगता है।

डा० क्रेसी ने अपने परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक जीवाणु में अत्यन्त छोटे आकार के जीवाणु-समूह निरंतर विचार का काम करते रहते हैं। मनुष्य के शरीर का नियन्त्रण उस छोटे-से जीवाणु के वश में होता है। इससे भी बढ़कर कुछ अति आधुनिक वैज्ञानिकों का तो कथन है कि शरीर के प्रत्येक अङ्ग में स्थित जीवाणु का अपना पृथक् मस्तिष्क होता है। वह मस्तिष्क हर एक अङ्ग की चेष्टाओं तथा कार्य-कलापों पर नियन्त्रण रखता है। आमाशय यकृत प्लीहा (तिल्ली) फुफ्फुस व हृदय ऐसे ही मुख्य विचार-केन्द्र या मस्तिष्क हैं जो मुख्य मस्तिष्क से सम्बद्ध हैं। शरीर का एक-एक अणु अपने समूह (Group) की रक्षा, विकास तथा कार्य क्षमता की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। उदाहरणार्थ यकृत शक्कर (Sugar) बनाने का कार्य करता है। वह शरीर के विषैले अंशों को दूर करता है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में यकृत का प्रत्येक परमाणु प्रतिपल जुटा रहता है। ज्यों ही रक्त में विषैले तत्त्वों की कुछ मात्रा प्रविष्ट होती है, त्यों ही आमाशय तथा पाचन-संस्थान के अन्य अङ्ग दुर्बल हो जाते हैं उनकी कार्य-शक्ति कुण्ठित हो जाती है। तब भोजन का पाचन एवं समीकरण (Assi-

milation) भली भाँति नहीं हो पाता। तब उनमें वस्तु तथा विषैला अंश उत्पन्न हो जाता है। रक्त उस अंश को शुद्ध करने का प्रयत्न करता है परन्तु वह उस अंश की अधिकता से भरकर स्वयं दूषित हो जाता है। उस समय शरीर के सभी अणुओं की व्यवस्था बिगड़ जाती है। तब हृदय की गति धीमी हो जाती है। नस नाड़ियाँ बलहीन अशान्त और शिथिल हो जाती हैं। कार्य के प्रति उनमें अरुचि पैदा हो जाती है। तब शरीर के सभी जीवाणु बल के लिए वावेला मचाते हैं। जीवाणुओं की दु:खभरी पुकार मस्तिष्क तक पहुँचती है। वह गंभीरता से विचार करने लगता है। फिर मनुष्य किसी डाक्टर के पास पहुँचता या यदि उसे किसी दवा का पता होता है तो वह उसका प्रयोग करता है। इसमें भी यदि वह धैर्य पूर्वक दवा करता है तो शीघ्र नीरोग हो जाता है और यदि चिन्तातुर होकर बेतरह दवाइयों के पीछे भागता है जल्दी-जल्दी बदल-बदल कर दवाएँ खाता या बदल-बदल कर डाक्टरों को दिखलाता है तो उसका शरीर नीरोग होने की अपेक्षा और भी रोगाक्रान्त और दुर्बल हो जाता है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्य डाक्टरों तथा दवाओं में इतना धन और समय व्यय कर डालता है कि उसके पास पोषक भोजन के लिए पैसा नहीं रहता और विश्राम करने को समय नहीं बचता।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा इसी विचार पर आश्रित है कि सोचना केवल मस्तिष्क का ही कार्य नहीं, अपितु शरीर का एक-एक जीवाणु भी विचारशील है। अन्धे लोगों के हाथों की उँगलियों के अग्र भाग पढ़ने का काम

करते देखे जाते हैं। इससे यही प्रत्यक्ष स्पष्ट होता है कि उनका मस्तिष्क उनके कराम में होता है।

देखना सुनना छूना सूंघना चलना आना-जाना, सोना श्वास लेना आदि सम्पूर्ण चेष्टाएं सारी की सारी क्रियाएं जीवाणुओं द्वारा ही सम्पन्न होती हैं। हम प्रत्येक पग आगे बढ़ाते हुए नहीं विचार करते अपितु अणु प्रत्येक पग आगे बढ़ाते हुए विचार करता है। सुषुप्ति या निद्रावस्था में मस्तिष्क की सम्पूर्ण क्रियाएँ बन्द रहती हैं। उस समय हृदय को 'धुकधुक' को कौन चलाता है? हृदय के विचारशील अणु स्वयं मस्तिष्क रखते हैं। वे ही सुषुप्ति में भी हृदय को स्वाभाविक क्रिया को जारी रखते हैं। प्रत्येक अंग के जीवाणुपुञ्ज अपनी सामान्य क्रियाएँ अपने अणुओं द्वारा चलाते चले आते हैं। दुघट-नाओं में जब मस्तिष्क पर चोट लगती है और उसके अनेकों तन्तु टूट जाते हैं तब भी यह देखा गया है कि मस्तिष्क की विचार-शक्ति पर बहुत अधिक असर नहीं होता। प्रायः मनुष्य के अंग अपना-अपना कार्य ठीक से निभाते चलते हैं। एक वैज्ञानिक ने एक मनोरञ्जक परीक्षण से इस सिद्धान्त की पुष्टि की है—

एक मेंढक का सिर काटकर उसकी टाँग पर तेजाब की एक बूंद डालकर यह देखा गया कि वह दूसरे पैर से टाँग पर पड़ी तेजाब की बूंद को हटाने का प्रयत्न करता है। इससे प्रकट है कि विचार-शक्ति मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं, अपितु शरीर का अणु अणु विचार करता है।

मस्तिष्क का शरीर में एक छोटा-सा स्थान है। उसके

milation) भली भाँति नहीं हो पाता। तब उनमें बदबू तथा विषैला मैल उत्पन्न हो जाता है। रक्त उस मैल को शुद्ध करने का प्रयत्न करता है, परन्तु वह उस मैल की अधिकता से भरकर स्वयं दूषित हो जाता है। उस समय शरीर के सभी अणुओं की व्यवस्था बिगड़ जाती है। तब हृदय की गति धीमी हो जाती है। सब नाड़ियाँ बलहीन क्लान्त और चिड़चिड़ी हो जाती हैं। कार्य के प्रति उनमें अरुचि पैदा हो जाती है। तब शरीर के सभी जीवाणु बल के लिए चावेला मचाते हैं। जीवाणुओं की दुःखभरी पुकार मस्तिष्क तक पहुँचती है। वह गंभीरता से विचार करने लगता है। फिर मनुष्य किसी डाक्टर के पास पहुँचता या यदि उसे किसी दवा का पता होता है तो वह उसका प्रयोग करता है। इसमें भी यदि वह धैर्य-पूर्वक दवा करता है तो शीघ्र नीरोग हो जाता है और यदि चिन्तातुर होकर बेतरह दवाइयों के पीछे भागता है जल्दी-जल्दी बदल-बदल कर दवाएँ खाता या बदल-बदल कर डाक्टरों को दिखलाता है तो उसका शरीर नीरोग होने की अपेक्षा और भी रोगाक्रान्त और दुर्बल हो जाता है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्य डाक्टरों तथा दवाओं में इतना धन और समय व्यय कर डालता है कि उसके पास पोषक भोजन के लिए पैसा नहीं रहता और विश्राम करने को समय नहीं बचता।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा इसी विचार पर आश्रित है कि सोचना केवल मस्तिष्क का ही काम नहीं, अपितु शरीर का एक-एक जीवाणु भी विचारशील है। अन्धे लोगों के हाथों की उँगलियाँ के अग्र भाग पढ़ने का काम

करते देखे जाते हैं। इनसे यही स्पष्ट होता है कि उनका मस्तिष्क उनके हृदय में होता है।

चलना फिरना खाना सूँघना चखना अन्न-जल लेना श्वास लेना आदि सम्पूर्ण चेष्टाएँ, सारी की सारी क्रियाएँ कोशाणुओं द्वारा ही सम्पन्न होती हैं। हम प्रत्येक पग आगे बढ़ाते हुए नहीं विचार करते परन्तु अणु प्रत्येक पग आगे बढ़ाते हुए विचार करता है। सुषुप्ति या निद्रावस्था में मस्तिष्क की सम्पूर्ण क्रियाएँ बन्द रहती हैं। उस समय हृदय की 'धुकधुक' को कौन चलाता है? हृदय के विचारशील अणु स्वयं मस्तिष्क स्वरूप हैं। वे ही सुषुप्ति में भी हृदय की स्वाभाविक क्रिया को चालू रखते हैं। प्रत्येक अंग के कोशाणुसमूह अपनी सामान्य क्रियाएँ अपने अणुओं द्वारा सम्पन्न करते जाते हैं। दुर्घटनाओं में जब मस्तिष्क पर चोट लगती है और उसके अनेकों तन्तु टूट जाते हैं तब भी यह देखा गया है कि मस्तिष्क की विचार-शक्ति पर बहुत अधिक असर नहीं होता। प्रायः मनुष्य के अंग अपना-अपना काम ठीक से निभाते रहते हैं। एक वैज्ञानिक ने एक मनोरंजक परीक्षण से इस सिद्धान्त की पुष्टि की है—

एक मेंढक का सिर काटकर उसकी टाँग पर तेजाब की एक बूँद डालकर यह देखा गया कि वह दूसरे पैर से टाँग पर पड़ी तेजाब की बूँद को हटाने का प्रयत्न करता है। इससे प्रकट है कि विचार-शक्ति मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं, अपितु शरीर का अणु अणु विचार करता है।

मस्तिष्क का शरीर में एक छोटा-सा स्थान है। उसके

जिम्मे काम भी सीमित है। शेष सारे शरीर के अंग प्रत्यंग का काम मस्तिष्क को ही नहीं करना पड़ता। शरीर के अंग प्रत्यंग की अपनी अपनी प्रयोगशाला और अपने अपने कारखाने हैं जो मस्तिष्क को तंग किए बिना अपने आप चलते रहते हैं। उन संस्थानों के बुद्धिमान् जीवाणु स्वयं ही अपने-अपने कार्य में तत्पर रहते हैं।

हरएक जीवाणु दूसरे जीवाणु पर प्रभाव डालता है। एक मनुष्य भोजन करने बैठता है। उसी समय उसे किसी प्रियजन की मृत्यु का तार मिलता है। उसे पढ़कर वह सन्न रह जाता है। उसकी भूख समाप्त हो जाती है। इससे प्रकट है कि मस्तिष्क ही केवल नहीं विचारता अपितु प्रत्येक अंग के अणु-अणु पर विचार का प्रभाव पड़ता है।

किसी भय या रोग की आशंका आदि से शरीर में यह प्रतिक्रिया होती है कि शरीर का वह भाग संकुचित होने लगता है। क्यों?—इसका कारण प्रत्यक्षतः यही है कि उस अंग के परमाणुओं तक वह विचार पहुँचा है, जिससे वहाँ सिकुड़न हुई।

एक स्वस्थ सुन्दरी नवयुवती को किसी ने भ्रम में डाल दिया कि उसके माता पिता को क्षय का रोग था। बस, फिर क्या था? वह बेचारी चिन्ताग्रस्त रहने लगी। शीत ऋतु में जरा-सी खाँसी आने पर उसे क्षय का भ्रम हो जाता वह काँप उठती। वह थूककर उसके रंग को देखती उसमें क्षय के कीटाणुओं की खोज करती। उसकी चिन्ता उसके पाचन-संस्थान तथा अन्य अंगों की स्वाभाविक क्रिया में बाधा पहुँचाने लगी जिससे उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। उसके चेहरे का रंग पीला पड़

श्यकता है। अब आप गिलास के पानी में मीठा डालेंगे, तो वह तो मीठा होकर ही रहेगा। संसार की कोई भी शक्ति उसे मीठा होने से नहीं रोक सकती।

जो व्यक्ति आपको निर्धन दिखाई देगा वह मन से निर्धन होगा। यदि मन समृद्धि की लहरों में हिलोरें लेने लगे तो निर्धनता की मलीनता तुरन्त बह जाएगी। जिसके मन में समृद्ध होने की तरंग ही नहीं उठती, उसके पास धन-सम्पत्ति क्या आएगी? जो मन से दरिद्र है उसके लिए संसार के धन भण्डार हैं ही नहीं। यदि हैं भी तो वह उनसे कुछ नहीं ले पाता क्योंकि वह उन्हें अपना समझता ही नहीं। उन पर वह अपना अधिकार ही नहीं मानता। इसलिए मित्र! सबसे पूर्व मन में समृद्धि के विचार समृद्धि की प्रबल आकांक्षा, समृद्धि की तड़प लाने की आवश्यकता है। यदि समृद्धि को आप काम्य नहीं समझते यदि उसे आपने लक्ष्य ही नहीं बनाया तो वह किस प्रकार आपके पास चली आए?

प्रबल इच्छा-शक्ति और विश्वास के बल पर आप अपने लक्ष्य के अनुकूल साधनों को अपनाकर निरन्तर विचारपूर्वक श्रम में जुट जाएँ सच्चे दिल से प्रयत्न करें, तो जितनी लक्ष्मी की आपकी इच्छा है, उससे भी अधिक वह आप पर बरसने लगेगी।

पुरानी दकियानूसी विचारधारा के लोग अभी तक समृद्धि का सम्बन्ध भाग्य रेखा से जोड़े हुए हैं परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में नवीन विचारधारा के लोग समृद्धि का सीधा सम्बन्ध श्रम से मानते हैं। जिस वस्तु का बीज आपके हृदय में है वही पुष्पित पल्लवित होगी।

यदि आपने धन-सम्पत्ति का बीज अपने हृदय में बोया है, तो उसे बढ़ाइए। उसे सींचिए, उसे खाद दीजिए और आप देखेंगे कि समय पाकर वह साकार महावृक्ष बन जाएगा। आप खेत में बीज फेंककर आराम से सो जाइए, तो आप की खेती क्या होगी? श्रम का समृद्धि से अटूट सम्बन्ध है। आपको मनभर श्रम की आवश्यकता है प्रतिभा तो एकाध सर ही प्राप्त होती है। मन की गहराइयों में उतर जाइए। विचार कीजिए कि किस प्रकार का कार्य आपकी प्रतिभा रुचि क्षमता तथा योग्यता के अधिक अनुरूप है बस उसी कार्य को अपने लिए चुन लीजिए। उसी कार्य में पूरी लगन से निष्ठा से संकल्प से मन प्रसाद से, सौम्यता से धैर्य से निरन्तरता से लग जाइये। उसके पक्ष की सारी क्रियाएँ कीजिए उसके पथ की सब बाधाओं को हटाइए उसके सहायक व्यक्तियों से मिलिए उन्हें इकट्ठा कीजिए। उस कार्य के साधनों को जुटाने में कुछ भी न उठा रखिए। फिर विधिपूर्वक सारे कार्य को सम्पन्न कीजिए। बस यही आपकी सम्पत्ति है। सम्पत्ति शब्द का यही अर्थ है। कार्य को सम्पन्न करना ही सम्पन्नता है। जो कार्य को सम्पन्न नहीं कर पाता, वही विपन्न है, दुःखी है दरिद्र है गरीब है लांछित है अपमानित है। जो कार्य-सम्पत्ति—क्रियानिष्पत्ति में कुशल है उसकी समृद्धि का मार्ग कौन रोक सकता है? जो दीर्घसूत्री है आज का काम कल पर टालता है ढीला-ढाला रहता है जिसका कोई लक्ष्य नहीं कोई कार्यक्रम नहीं, जो केवल भाग्य के भरोसे बैठा रहता है उसे लक्ष्मी घृणा की दृष्टि से देखती है। वह अनाड़ी है। समृद्धि उसके निकट नहीं आती।

यह तो अपने हाथ में बचे-खुचे थोड़े-बहुत पैसे को भी बचा नहीं सकता, अधिक धनी होने की तो बात ही क्या ?

समृद्ध होना आपके स्वभाव है। जब तक आप अपने को दरिद्रता के अधीन मानते हैं अपने को उसके लिए ही बने मानते हैं, उसके आगे अपने को विवश समझते हैं तब तक वह आप पर अपना प्रभाव जमाए रहेगी। जब आप उसे दुत्कार कर, धिक्कारकर मन से और तन पर से बाहर करने को उद्यत हो जाते हैं तब वह किसी तरह आपके यहाँ नहीं टिक सकती।

पश्चिमी रेगिस्तान के लोग बालू में छोटे-छोटे मरौंदे बनाकर जीवन काट लेते हैं। बहुत हुआ तो दो-एक पशु पाल लिए। वे नहीं जानते कि जिस धरती पर वे रहते हैं, उसी के भीतर अमूल्य खनिजों के अतुल भंडार भरे पड़े हैं। यदि वे अपनी बुद्धि का प्रयोग कर पाएँ तो वे संसार के समृद्ध देशों में हो जाएँ पर अज्ञानवश व गरीबी के कष्टों में ही सारी आयु काट देते हैं। ठीक इसी प्रकार वे लोग निरन्तर निर्धन बने रहते हैं, जो यह नहीं जान पाते कि उनके अन्दर कितनी योग्यता और क्षमता के अमूल्य भंडार भरे पड़े हैं। अतः इस बात की नितान्त आवश्यकता है कि आप अपनी योग्यता और क्षमता को पहचानें। अपने आपको पहचानें। यह जल्दी से जल्दी जान लेने में ही आपका कल्याण है कि आपका जन्म किस वस्तु के निर्माण के लिए हुआ है।

उक्त मरुभूमि के निवासियों से कुछ ही दूरी पर बुद्धिमान लोग बसते हैं जिन्होंने अपनी प्रज्ञा के प्रयोग से अपनी धरती को अत्यन्त उपजाऊ बना डाला है। उनके

उद्यान मन्दमन्द के समान महमहाते हैं। उनके सुखी जीवन से बड़े-से-बड़े समृद्ध लोगों को भी ईर्ष्या होती है।

कोई मनुष्य वन में से होकर अपने लक्ष्य स्थल को जा रहा था। वह मार्ग में भटक गया। उसके पास दिशा दर्शक यन्त्र न था। ठीक दिशा का ज्ञान न होने के कारण वह बार बार चक्कर काटकर फिर से एक ही स्थान पर आ जाता था। अपने मार्ग का उसे भान न रहा। अन्त में थका-हारा वह भूमि पर बैठ गया और चिन्ता में पड़ गया कि उस वन से बाहर कैसे निकले।

ठीक यही दशा आज असंख्य व्यक्तियों की है। उनके पास दिशा दिखाने वाला यन्त्र नहीं। जो जीवन में उनका सही मार्ग-दर्शन कर सके ऐसा कोई व्यक्ति नहीं। वे जीवन के निश्चित लक्ष्य को न पाकर निराशा के जंगल में भटकते भटकते थक कर चुप बैठ जाते हैं।

हम चाहते तो कुछ हैं और पग उसके विपरीत दिशा में रखते हैं। यदि हमारे चिन्तन और कर्म में सामंजस्य (तालमेल) स्थापित हो जाए तो हमारी प्रगति अनिवार्य है।

आप किसी ऐसे नवयुवक की कल्पना कीजिये जो मेडीकल कालेज में भर्ती हुआ है और उसे अपने डाक्टर होने का तनिक विश्वास नहीं। उसका मन सन्देह से भरा है कि वह शायद ही कभी डाक्टर की योग्यता को प्राप्त कर सकेगा। भला बताइए कि ऐसा नवयुवक क्या कभी डाक्टर बन पायेगा? भले ही उसके साथियों की तथा उसकी योग्यताओं में कुछ भी अन्तर न हो भले ही उसमें कुछ भी कमी न हो परन्तु अपने ऊपर सन्देह

और अविश्वास ही ऐसी कमियाँ हैं, जो उस युवक को अन्य साथियों की अपेक्षा, हर बात में पीछे रखेंगी। अतः प्रगतिशील व्यक्ति को सन्देह और अविश्वास का साथ छोड़ देना चाहिए। समझदार व्यक्ति सदा अपने ऊपर दृढ़ विश्वास रखकर लगातार अपने पथ पर आगे पैर बढ़ाते हुए चले आया करते हैं।

अपने चित्त में सदा इस बात को दोहराइए—सदा इस मन्त्र का जाप कीजिए—

"मैं ईश्वर-पुत्र हूँ। संसार की समस्त धन-सम्पत्ति ईश्वर की है। वही इसका स्वामी है। मैं ईश्वर-पुत्र हूँ। संसार की सारी धन-सम्पत्ति मेरी बपौती है। मेरे लिए सब प्रकार की धन-सम्पत्ति के द्वार खुले हैं। मैं दरिद्रता से जीवन व्यतीत न करूँगा। मैं गरीबी का लांछन अपने ऊपर कदापि न रहने दूँगा। मैं अपने जीवन की काया पलट कर सकता हूँ। मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर की सन्तान हूँ। उसकी शक्तियाँ मेरी हैं। मैं उनका प्रयोग करूँगा।"

बाइबिल में एक मन्त्र आया है—"परमेश्वर मेरी सहायता करने वाला है। फिर मुझे कोई भी अभाव कभी भी कष्ट नहीं दे सकता।" इस मन्त्र को सदा दोहराते रहना चाहिए। आशा की भावना से भरपूर अन्तःकरण लेकर प्रत्येक दिन के कार्य का आरम्भ कीजिए। संसार की प्रत्येक उत्तम वस्तु परमेश्वर से उसी तरह माँगिये जैसे पुत्र अपने पिता से माँगता है। वह तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी अवश्य प्राप्त होगी।

एक युवक था। कुछ समय पहले वह अत्यन्त निर्धनता का जीवन व्यतीत कर रहा था। कुछ दिन हुए,

जब उससे भेंट हुई तो उसने बताया कि उसके जीवन का कायापलट हो चुका है। उसके पास अपना सुन्दर बंगला है, अपनी मोटर है और सुख की सब सामग्रियाँ और सुविधाएँ विद्यमान हैं। पूछने पर उसने बताया कि उसके मन में उसी दिन से विचित्र परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया जिस दिन उसने यह जान लिया कि गरीबी अपने हाथों की बनाई हुई है। उसी दिन उसने अपने मन से गरीबी को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। उसके स्थान पर उसने समृद्ध बनने के सङ्कल्प और आत्मविश्वास को हृदय के आसन पर बिठाया। अल्पकाल में ही उसके सब मनोरथ पूर्ण होने शुरू हो गये।

सतत आशामयता ही समृद्धि एवं सुख की जननी है। निराशा मन की असमृद्धि या असम्पन्नता का ही दूसरा नाम है। समृद्ध होने के सङ्कल्प को हृदय में बिठाकर जब आप निराशा और असफलता को ललकारेंगे तो वे शीघ्र ही दूर भाग जायेंगी वे फिर टिक नहीं सकतीं।

समृद्धि के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा यह विचार ही है—"मैं दरिद्र रहने के लिए पैदा हुआ हूँ।" जहाँ इस विचार को आपने हृदय से निकाल दिया, वहाँ स्वयं समृद्धि के स्वप्न उसका स्थान ले लेंगे। जब उनके साथ जब आपकी कार्यशीलता जुड़ेगी, तो आप संसार के समृद्ध व्यक्ति बन पाएँगे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।



प्रभु से अभेद

संसार की महान्-से-महान् शक्तियों का जन्म-स्थान हृदय है। हृदय में ही वे अंकुरित होती हैं, वहीं वे पल्लवित और पुष्पित होती हैं। एक छोटा-सा बीज जैसे महान् वटवृक्ष में परिणत हो जाता है उसी प्रकार एक नन्हा-सा विचार—एक सूक्ष्म-सी कल्पना महान् सामर्थ्य और ऊँची-से-ऊँची योग्यताओं के रूप में परिणत हो जाती है। इसी बात को दूसरे शब्दों में ईसामसीह ने इस प्रकार कहा था—

"स्वर्ग का साम्राज्य तुम्हारे अन्तःकरण में ही है।"

परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है वह सब शक्तियों का मूल स्रोत एवं मूलाधार है। चिन्तन की घड़ियों में हम उससे जब अपना अभेद सम्बन्ध स्थापित करते हैं तब उसकी शक्तियों का अजस्र स्रोत हमारे अन्तःकरण में प्रवाहित होने लगता है। बिजली के पावर हाउस से जब एक तार जुड़ जाता है तब उससे बिजली की धारा (Current) प्रवाहित होने लगती है। फिर वह छोटा-सा तार बड़े-बड़े यन्त्रों को संचालित करने में समर्थ होता है। उस पावर हाउस से सम्बन्ध विच्छेद होते ही उस तार में कुछ भी शक्ति नहीं रह जाती।

प्रभु के सान्निध्य से मनुष्यों में विचार की पवित्रता आती है। विचारों की पवित्रता मन को एकाग्र बनाती है। एकाग्र मन जिस लक्ष्य को पूर्ण करना चाहता है, उस पर पूरी लग्न मन की शक्ति जुट जाती है तब कार्य सम्पन्न हो जाता है और मनुष्य सफल बन जाता है। फिर उसका यश फैल जाता है।

अकेला मनुष्य उदास होता है। जो अपने अन्तःकरण में स्थित प्रभु से सम्बन्ध जोड़े रहता है वह कभी अकेला नहीं होता वह कभी उदास नहीं, अतएव वह निराश भी नहीं होता। आशापूर्ण व्यक्ति कार्य अधिक कर पाता है। वह अधिक सफल होता है।

ईश्वर की दिव्य शक्ति से सम्बन्ध जोड़ने पर मनुष्य में दिव्यता आती है। ईश्वर विराट है, विराट् से अभेद होने पर मनुष्य स्वयं विराट् बनता है। विराट् बनने पर उसकी तुच्छता मिट जाती है वह महान् बन जाता है। महान् व्यक्ति कभी धन-सम्पत्ति से वंचित नहीं रहता।

ईश्वर निष्कलङ्क है परम सुन्दर है। उसका चिन्तन और ध्यान करने से मनुष्य में सौन्दर्य आता है। पुण्डरीकाक्ष का ध्यान करने से मनुष्य स्वयं पुण्डरीकाक्ष बन जाता है।

मनुष्य ईश्वर का अंश है। ईश्वर का ज्ञान किसी-न किसी रूप में उसके भीतर विद्यमान है। जब ईश्वर सृष्टि रचयिता है तो ईश्वर का अंश किसी न किसी वस्तु का रचयिता अवश्य होना चाहिए। कुम्हार का बेटा कुम्हार से बढ़िया बर्तन बनाने का प्रयत्न करता है, फिर हम प्रभु की बनाई सृष्टि को अधिक सुन्दर बनाने

का प्रयत्न क्यों न करे ?

सृष्टि की रचना सदा निर्बाध गति से चलती रहती है। वह निरन्तर प्रवहमान स्रोत है, जो कभी नहीं रुकता। जो मनुष्य कर्म नहीं करना चाहता, वह उस प्रवाह के मार्ग में बाधा है वह एक रोड़ा है। सृष्टि का प्रवाह उसे एक दिन बहाकर ले जाएगा।

जब हम ईश्वर से अपने को पृथक मान लेते हैं, तो अपने आपको जड़ मान लेते हैं। चेतन से पृथक होकर हम अचेतन पदार्थ बन जाते हैं। तब हमारी सारी चंचलता, सारी रचनाशक्ति, सम्पूर्ण क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है। तब हम बिजली के एक बुझे हुए बल्ब की तरह हो जाते हैं जो देखने में तो बल्ब हो है पर प्रकाश देने की उसमें शक्ति नहीं होती।

आत्मा का परमात्मा से अभेद सम्बन्ध जोड़ने का अर्थ है सर्वोत्तम शक्ति-स्रोत से अपना तार जोड़ना। उस शक्ति से सम्बन्ध जोड़ने पर सांसारिक समृद्धि एक छोटी बात रह जाती है। एक व्यक्ति के पास एक लाख रुपया हो तो यह प्रश्न ही व्यर्थ है कि उसके पास एक हजार रुपया है या नहीं। इसी प्रकार उस सर्वोत्तम शक्ति के होने पर यह प्रश्न ही तुच्छ प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति में धन-सम्पत्ति को कमाने की शक्ति है या नहीं। यह शक्ति तो उसके लिए एक साधारण बात होती है जो अनायास ही होती जाती है।

अबू-बिन आदम की प्रभु में अक्षय निष्ठा थी। वह सृष्टि के कण-कण में उसको व्याप्त मान कर मनुष्यमात्र की सेवा में लीन रहता था। एक दिन स्वप्न में उसके

पास एक देवदूत आया। वह देवदूत ईश्वर के प्रिय व्यक्तियों की सूची बना रहा था। अबू बिन आदम ने सोचा कि उसका नाम उस सूची में नहीं होगा, क्योंकि उसने ईश्वर की कभी पूजा तो की नहीं। दूसरी रात को वह देवदूत पुनः दिखाई दिया। अबू बिन आदम ने उसे वह सूची दिखाने का आग्रह किया। सूची को देखकर अबू बिन-आदम अत्यन्त चकित हुआ, क्योंकि उसमें सबसे ऊपर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा था—"अबू बिन आदम"।

जो लोग आत्मा को ही नहीं मानते, वे ईश्वर से क्या अभेद सम्बन्ध स्थापित करेंगे। उन्हें पहले प्रथम सीढ़ी पर चढ़ना चाहिए। पहले आत्मा को पहचानिए। इस शरीर के अन्दर जो "मैं" है, वह शरीर से पृथक कोई तत्त्व है। वह निकल जाता है तो शरीर बेकार पड़ा रह जाता है। वही आत्मा है जो "मैं" है। उसका साक्षात्कार कीजिए। फिर उसका सम्बन्ध उस सब शक्तिमान् प्रभु से जोड़िये।

परमेश्वर से सम्बन्ध होते ही मनुष्य का भय जाता रहता है। सब शक्तियों का भण्डार जिसका अपना है, वह क्यों डरे और किससे डरे? सबमें उसका प्रभु व्यापक है, फिर वह किससे घृणा, भय या द्वेष करे? प्रभु के साथ सम्बन्ध स्थापित करते ही आत्मविश्वास द्विगुणित हो जाता है। संसार के महानतम कार्य उन्हीं लोगों के हाथों सम्पन्न हुए हैं जिन्होंने ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित किया। न्यूटन अपने आपको प्रभु का एक छोटा-सा बालक मानता था। एडीसन का प्रभु में अटूट विश्वास,

था। ईश्वर की महान् शक्ति में विश्वास के कारण ही संसार में सभी महान् कार्य हुए हैं। बड़े-बड़े आविष्कार कर्ता महान् दार्शनिक उत्तम कलाकार उसी प्रेरणा से कार्य करते हैं। उनमें से कोई जब ईश्वर को नहीं मानता तो उसका केवल इतना ही तात्पर्य होता है कि वे ईश्वर को अपने से भिन्न नहीं मानते।

ईश्वर से पृथक होकर मानव मानव नहीं रहता, वह दानव बन जाता है। जुआ बेईमानी रिश्वतखोरी, झूठ—ये सभी शैतान के कारनामे हैं। दया, दान, प॰ पकार सेवा आदि ईश्वर-विश्वासी जनों के सहज धर्म हैं। ईश्वर से पृथक होकर कमाया धन आत्म-सन्तोष नहीं देता। ईश्वर से विमुख होकर पाया यश देर तक नहीं टिकता। ईश्वर के नियमों के विपरीत बल कर किये परिश्रम सफल नहीं हो पाते। वास्तविक प्रसन्नता, *वास्तविक सुख और वास्तविक आनन्द उसे ही मिलता* है जो अपने अन्तःकरण के तार निरन्तर उस सर्वशक्तिमान् के मंगल शक्तिस्रोत से जोड़े रहता है। वही सत्य को पाता है वही कल्याण को प्राप्त करता है। वही श्रेष्ठ बनता है। वही शोभा पाता है। वही कीर्ति पाता है। उसका नाम अमर हो जाता है।

